# शिव अवतरण

ओमशान्ति मीडिया | महाशिवरात्रि विशेषांक | माउण्ट आबू

# परमात्मा का शुभ आगमन समय चक्र में!!!

**समय चक्र में ना तो समय से पहले कुछ प्राप्त होना है, ना तो समय बीत जाने के बाद। अगर कुछ प्राप्त होगा, तो समय रहते। इसकी गति इतनी तीव्र है कि उसे पहचानने के लिए हमें समयातीत होना होगा। जीवन को समय से पहले समय रहते तैयार कर उस शुभ अवसर को लाना होगा जिसके साथ सुख शांति और आनंद के तार जुड़े हुए हैं। आज जुड़ाव कहीं और है, इसलिए प्राप्ति दु:खदायी है। असंयमित जीवन को फिर से संयमित जीवन में परिवर्तित करने हेतु परमपिता परमात्मा शिव अवतरित होते हैं। बस हमें उन्हें पहचान कर, उनसे सम्बन्ध जोड़कर अपने जीवन को बदल लेना है व श्रेष्ठ बनाना है। तो अब हम आप और सभी समय चक्र में इस शुभ अवसर का लाभ लेकर अपने आप को धन्य बनायें। अब नहीं तो कब नहीं...।**

मनुष्य की जीवन यात्रा में कई चक्र पुन: रिपीट हुआ करते हैं। जैसे आपने देखा होगा कि सुबह होती है, फिर दोपहर, फिर शाम, फिर रात, ये दिवस चक्र है। इसी प्रकार से सोमवार से रविवार, फिर रविवार से सोमवार, ये सप्ताह चक्र है। ऐसे ही मौसम चक्र, ऋतु चक्र, मास चक्र, वर्ष चक्र, ये आते ही रहते हैं। कुल मिलाकर एक शब्द में अगर कहा जाए तो हर एक चीज़ अपने स्थान पर फिर से अपना एक साइकिल पूरा करके आती है। ऐसे ही इस सृष्टि चक्र में एक समय था, जिसको लोग सतयुग कहते थे, इसलिए हम सृष्टि चक्र को काल चक्र के साथ जोड़ सकते हैं। जो सार रूप में मानव मन की चार अवस्थाओं से बना हुआ माना जा सकता है। जिसको क्रमश: सतयुग, त्रेता युग, द्वापरयुग और कलियुग कहते हैं। इन अवस्थाओं में जो सतयुग और त्रेता की अवस्था थी, उस काल खंड में मानव बहुत शांत व सुखी था। लेकिन चक्र फिरने के साथ साथ मन की अवस्था भी बदलनी शुरू हो गई। उदाहरण के लिए, जो पूरे दिन में इंसान होता है, उसकी प्रकृति, उसका स्वभाव दिन में कुछ और होता है, लेकिन रात को उसी इंसान से मिलो तो उसकी अवस्था कुछ और होती है, ड्रेस अलग होता है, भाव अलग होता है व सोच अलग, लेकिन इंसान वही होता है। उसकी मनोस्थिति बदलती नज़र आती है। ऐसे ही जब सतयुग त्रेता का समय होता है, तब दिन की अवस्था होती है, उस समय सब अच्छा होता है, सबकुछ दिखाई देता है। जैसे जैसे रात अर्थात् द्वापर और कलियुग आता है, वैसे वैसे हमारी अवस्था में परिवर्तन आता है। इसका एक और उदाहरण है, कि आज भी लोग कहते हैं कि भारत सोने की चिड़िया था, अर्थात् चारो तरफ सुख-शांति-सम्पत्ति प्रचुर मात्रा में थी, शरीर स्वस्थ था व इंसानों को हम एक ऊँची अवस्था में देखते थे जिन्हें हम देवता कहते हैं। समय बीतने के उपरांत हम देवतायें नीचे की ओर सृष्टि चक्र में आये, उतरते चले गये और एक साधारण मनुष्य के रूप में जीवन जीने लगे। चूंकि यह चक्र बहुत धीमी गति से चलता है, अब वो रात की अवस्था पुन: परिवर्तित होने वाली है। आपको यह जानकर बहुत खुशी होगी कि ये चक्र फिर से रिपीट हो रहा है और परमात्मा द्वारा फिर से इस सृष्टि चक्र में समय के बाद और समय के पहले का जो समय है, जिसको हम संगमयुग कहते हैं, उसमें परमात्मा आकर अपना सत्य परिचय देकर हमें सतयुगी दुनिया का मालिक पुन: बनाते हैं। इस संगमयुग का समय हीरे जैसा माना जाता है। इस समय जिसने जो अवस्था बना ली, वो बना ली। हम सबकी यही चाह है कि राम राज्य इस धरा पर हो, जहाँ सुख-शांति-खुशी का साम्राज्य हो। तो हमें आपको ये बताते हुए अति हर्ष हो रहा है कि ऐसी दुनिया की स्थापना की घड़ी इस समय चक्र में आ पहुँची है जब स्वयं परमात्मा शिव का अवतरण इस महापरिवर्तन हेतु हो चुका है। तो आप भी तो ऐसी दुनिया में चलना चाहोगे ना...! और उसके लिए समय बहुत थोड़ा रह गया है। हमें समय से पहले तैयार होना ही पड़ेगा।

**अरसों से बिछड़ा हुआ साथी जब कभी हमसे मिलने आता है, तो हम फूले नहीं समाते। ऐसे ही हमारा परमात्मा पिता जो अरसों से हमसे बिछड़ा हुआ है, वो अब हमसे मिलने को आतुर है, और खुशियाँ लुटाने के लिए हमारे दर पर खड़ा है। तो इस शिवजयंती पर उन खुशियों को बटोर लो, कहीं झोली खाली न रह जाये। हम तो इन खुशियों का अनुभव कर रहे हैं, आप भी करके देखें..!!!**

## शुभकामना संदेश

सबको सुख चैन आराम देने वाले दिलाराम, जो हमारी भावनाओं को समझते हैं, हमपर पूरे बलिहार जाते हैं, अब वे इस धरा पर अवतरित हो चुके हैं। हम सभी अभी इसका पूरा-पूरा सुख ले रहे हैं। लेकिन हमारी ये दिल से आशा है कि हमारे भाई बहनें भी उस दिलाराम से सम्बंध जोड़कर इलाही सुख लें। भारत देश पुन: देव भूमि व धन धान्य से सम्पन्न बने जहाँ सुख शांति का अखुट भंडार होगा। वो सुनहरी घड़ियाँ हमारे सामने हैं, क्योंकि परमात्मा शिव के आगमन से नई दुनिया का आगमन निश्चित है। परमात्मा शिव की हम बच्चों प्रति यही शुभ आशाएं हैं कि जो कुछ मिला उसे जन जन को बांटो, कोई वंचित न रह जाये। इस महाशिवरात्रि के अवसर पर चारो ओर शिव संदेश फैलाओ ताकि पूरे विश्व के कोने कोने से एक ही आवाज़ आये कि हमारा परमात्मा इस धरा पर आ चुका है। इन्हीं शुभ कामनाओं के साथ आपको शिव जयंती की हार्दिक शुभकामनाएँ। - ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी।

## परमसत्ता से जुड़ाव शक्ति का आधार

हर असंभव कार्य संभव होगा, लेकिन उसके लिए ज्ञान और अनुभव बढ़ाने की आवश्यकता है।

परमात्मा की सत्य पहचान और अपनी सत्य पहचान कर उससे सम्बन्ध जोड़ने की आवश्यकता है। इसके लिए अपनी इंद्रियों पर संयम भी ज़रूरी है। स्वयं को हर पल जागृत रख, उस परम सत्ता से योग रखने से हम स्वयं को बदल पायेंगे और उसका प्रभाव पूरे विश्व पर स्वत: ही पड़ेगा। सभी स्वयं को जागृत कर उस परमात्मा से सम्बन्ध जोड़कर अपने को सशक्त बनायें और निरोगी बन जायें। यही सभी के प्रति मेरी दिल से शुभकामना है। - प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी।